नवभारत फोटो

आप वास्तव में जो करना चाहते हैं वही करें: डॉ. शर्मा

आयोजन

आईआईएम का आठवां दीक्षांत समारोह

ट्राई के अध्यक्ष डॉ. राम सेवक शर्मा रहे मुख्य अतिथि

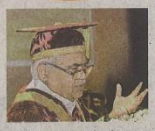

■ नवभारत रिपोर्टर। रायपुर.

भारतीय प्रबंध संस्थान (आईआईएम) का आठवां दीक्षांत समारोह गुरुवार को नया रायपुर के पोता-चेरिया स्थित नए संस्थान में आयोजित किया गया. समारोह के मुख्य अतिथि भारतीय दूरसंचार नियामक प्राधिकरण (ट्राई) के अध्यक्ष डॉ. राम सेवक शर्मा रहे. उन्होंने दीक्षांत भाषण में विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि हमेशा जिंदगी में वही काम करें, जो वास्तव में आप करना चाहते हैं. ऐसा करने पर कई बार लोग पागल या सनकी समझ सकते हैं, लेकिन बाद में सफल होने पर वही लोग तारीफ करते नहीं थकते.

डॉ. शर्मा ने कहा कि जिंदगी अनिश्चिताओं और दिक्कतों से भरी है. परंतु, यही वह समय होता है, जब इंसान को आगे बढ़ने का मौका मिलता है. बस, इस मौके को पहचानने की जरूरत है. उन्होंने कहा कि जीवन में जो भी घटनाएं होती हैं, उससे कुछ न कुछ सीखने को मिलता है और यही सीख जीवन में काम आती है.

कभी-कभी हम हर चीज में फायदा देखने लगते हैं. जिसमें फायदा नजर नहीं आता, उसे अनुपयोगी समझ लेते हैं. लेकिन ऐसा नहीं होता. हमें अपनी सोच और नजरिया बदलने की जरूरत है. हमें हर काम फायदे के लिए नहीं, बल्कि खुशी के लिए करना चाहिए. अक्सर इंसान फायदे के चक्कर में इतना उलझ जाता है कि उसकी रातों की नींद हराम हो जाती है. उन्होंने ने वुड पेकर मैनेजमेंट शैली पर जोर देते हुए कहा कि इंसान को कभी-कभी बिना किसी उम्मीद के भी प्रयास करते रहना चाहिए. डॉ. शर्मा ने विद्यार्थियों को नसीहत देते हुए कहा कि वे जिस भी परिवेश से आए हों, लेकिन उन्हें उस पर गर्व होना चाहिए. कभी बनावटी न दिखें, जो असलियत है, उसी में रहें. समारोह को आईआईएम बोर्ड ऑफ गवर्नर की अध्यक्ष श्यामला गोपीनाथ ने भी संबोधित किया. उन्होंने सभी पासआउट विद्यार्थियों को सलाह दी कि वे हमेशा अपने देश और माता-पिता की सेवा करें. क्योंकि वे आज जो कुछ भी हैं, उन्हीं की बदौलत हैं. उन्होंने डॉयरेक्टर प्रो. भारत भास्कर को बेस्ट डायरेक्टर अवार्ड मिलने की भी बधाई दी. इस अवसर पर प्रो. भास्कर ने संस्थान की रिपोर्ट प्रस्तुत की. उन्होंने बताया कि पिछले नौ सालों में आईआईएम रायपुर ने दुनियाभर में अपनी अलग पहचान बनाई है. शिक्षा के साथ प्लेसमेंट के क्षेत्र में लगातार सुधार हो रहा है. यहां के विद्यार्थियों को पिछले वर्ष जहां 12.50 लाख का औसत पैकेज प्राप्त हुआ था, वहीं इस वर्ष 14.50 लाख रुपए का औसत पैकेज प्राप्त हुआ है. रिसर्च के क्षेत्र में आईआईएम रायपुर बेहतर काम कर रहा है. दूसरे आईआईएम की तुलना में रायपुर आईआईएम में ज्यादा रिसर्च हो रहे हैं, जिस पर उन्हें गर्व है.

179 को डिग्री, 54 को डिप्लोमा और 8 को पीएचडी

आईआईएम के आठवें दीक्षांत समारोह में सत्र 2017-19 के 179 विद्यार्थियों को पोस्ट ग्रेजुएट प्रोग्राम इन मैनेजमेंट (पीजीपी) की डिग्री प्रदान की गई. आईआईएम बिल में संशोधन होने के बाद पहली बार विद्यार्थियों को पीजीपी की डिग्री प्रदान की गई है. इसके साथ ही सत्र 2016-18 बैच के 54 विद्यार्थियों को पोस्ट ग्रेजुएट प्रोग्राम इन मैनेजमेंट (पीजीपी) का डिप्लोमा प्रदान किया गया. ये विद्यार्थी विछले वर्ष विदेशी मुद्रा कार्यक्रम में हिस्सा लेने बाहर गए थे, जिसकी वजह से दीक्षांत में शामिल नहीं हो सके थे. इन विद्यार्थियों को इस वर्ष पीजीपी डिप्लोमा प्रदान किया है. इसके अलावा 8 विद्यार्थियों को पीएचडी भी प्रदान की गई.

डिग्रियां और मेडल पाकर दमके चेहरे

दो साल की कड़ी मेहनत का फल जब हाथों में आया तो खुशी देखते ही बनी

रायपुर. आईआईएम के दीक्षांत समारोह में डिग्रियां और मेडल पाकर विद्यार्थियों के चेहरे दमक उठे. दो साल की कड़ी मेहनत का फल जब हाथों में आया तो खुशी देखते ही बनी. समारोह में सत्र 2017-19 के 179 विद्यार्थियों को डिग्री और 2016-18 के कुल 54 विद्यार्थियों को डिप्लोमा प्रदान किया गया. इसके अलावा 8 शोधार्थियों को पीएचडी भी प्रदान की गई.

समारोह का शुभारंभ अपरान्ह 3.30 बजे हुआ. इसके पूर्व आईआईएम परिसर में ग्रुप फोटोग्राफी की गई. इसके बाद सभी अतिथियों और विद्यार्थियों ने शोभायात्रा की शक्ल में ऑडिटोरियम में प्रवेश किया. मंत्रोच्चार और दीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ. सर्वप्रथम आईआईएम के डॉयरेक्टर प्रो. भारत भास्कर ने संस्थान की रिपोर्ट प्रस्तुत की. इसके बाद बोर्ड ऑफ गवर्नर (बीओजी) की अध्यक्ष श्रीमती श्यामला गोपीनाथ ने विद्यार्थियों को संबोधित किया. उनके संबोधन के बाद सबसे पहले आठ शोधार्थियों को पीएचडी प्रदान की गई. इसके बाद पोस्ट ग्रेजुएट प्रोग्राम इन मैनेजमेंट (पीजीपी) सत्र 2017-19 के विद्यार्थियों को डिग्रियां प्रदान की गईं. इसके पश्चात सत्र 2016-18 के विद्यार्थियों को डिप्लोमा प्रदान किया गया. आईआईएम बिल में संशोधन के बाद इस वर्ष पहली बार विद्यार्थियों को डिग्रियां दी गईं. पिछले वर्ष के कुछ विद्यार्थी दीक्षांत समारोह में डिप्लोमा लेने से चूक गए थे, इसलिए उन्हें इस वर्ष दीक्षांत में सर्टिफिकेट प्रदान किया गया. डिग्री, डिप्लोमा और पीएचडी अवार्ड होने के बाद भारतीय दूरसंचार नियामक प्राधिकरण (ट्राई) के अध्यक्ष डॉ. सेवक राम शर्मा ने दीक्षांत भाषण दिया. समारोह के समापन की घोषणा होने के साथ ही विद्यार्थियों का उत्साह देखते ही बना. इसके बाद आपस में मिलकर एक-दूसरे को बधाई देने का सिलसिला देर तक चलता रहा. विद्यार्थियों की खुशी में उनके पालकों ने भी शिरकत की.

निरंतर अभ्यास से पाया चेयरपर्सन गोल्ड मेडल

सत्र 2017-19 बैच में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने पर राही जैन को चेयरपर्सन गोल्ड मेडल प्रदान किया गया. मूल रूप से खंडवा मध्यप्रदेश के रहने वाले राही ने बताया कि उन्होंने निरंतर अभ्यास के जरिए सर्वाधिक अंक प्राप्त किया. इसमें शिक्षकों और दोस्तों का भी भरपूर सहयोग रहा. राही मैकेनिकल इंजीनियर हैं. वे बताते हैं कि इंजीनियरिंग के दौरान ही उन्हें लगा कि यह केवल टेक्निकल साइड है. इसका बड़ा साइड को मैनेजमेंट ही है. इसके बाद उन्होंने एमबीए की ओर रुख किया. राही के पिता सुशीलचंद जैन खंडवा में ट्रांसपोर्ट का बिजनेस करते हैं. वहीं माता श्रीमती सुनीता जैन गृहिणी हैं.

बचपन से तय किया एमबीए करना

पीजीपी चेयरपर्सन मेडल प्राप्त करने वाली शैलजा तिवारी ने बताया कि उन्होंने बचपन से ही तय रखा था कि उन्हें एमबीए करना है. इसके लिए आईआईएम से बेस्ट जगह कोई नहीं हो सकती थी. मूल रूप से जबलपुर की रहने वाली शैलजा फिलहाल आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लाइफ इंश्योरेंस कंपनी में कार्यरत है. उनके मुताबिक अगर आप क्लास में अच्छे से पढ़ाई करते हैं तो उसके बाद बहुत ज्यादा पढ़ने की जरूरत नहीं होती. उनके पिता अशोक कुमार तिवारी रिटायर्ड इंजीनियर हैं. वहीं माता अनीता तिवारी गृहिणी हैं. शैलेजा के अनुसार, आईआईएम रायपुर मैनेजमेंट की पढ़ाई के लिए बेस्ट संस्थान है.

काम छोड़कर फिर से की पढ़ाई

डॉयरेक्टर मेडल प्राप्त करने वाली नंदनीबुसी रेड्डी इंजीनियरिंग करने के बाद स्वीडिस कंपनी एबीबी में अच्छी-खासी सैलरी पर काम करने लगी थीं. फिर उन्हें लगा कि मैनेजमेंट की पढ़ाई करने से और अच्छी जिम्मेदारियां मिल सकती हैं. उन्होंने काम छोड़कर फिर से पढ़ाई का मन बनाया और आईआईएम रायपुर में दाखिला लिया. नंदनीबुसी ने वेल्लूर इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में स्नातक किया है. उनके अनुसार, रायपुर बेहद खूबसूरत जगह है. यहां आने से पहले लोगों ने उन्हें बहुत डराया था कि पिछड़ा और नक्सल प्रभावित क्षेत्र है. यहां आकर उन्हें बेहद खुशी हुई है.

हर क्षेत्र में रहे शानदार, मिला ओवरऑल परफार्मेंस मेडल

पढ़ाई-लिखाई के साथ हर क्षेत्र में शानदार प्रदर्शन करने पर सिलवेस्टर सैमुअल को ओवरऑल परफार्मेंस का मेडल दिया गया. सैमुअल के अनुसार, उन्हें जो भी मिला करते चले गए. उन्होंने यह कभी नहीं सोचा कि मेडल के लिए कुछ कर रहे हैं. उन्होंने हर क्षेत्र में अपना बेस्ट देने की कोशिश की. सैमुअल मूलरूप से त्रिची, तामिलनाडु के रहने वाले हैं. उनके पिता जी. सुदेश और माता तेरसा गुणसिली दोनों रिटायर्ड टीचर हैं.

Navbharat, 26th April 2019,P.7(Rajdhani)